

वैकोम सत्याग्रह

प्रलम्ब के लिये:

वैकोम सत्याग्रह के नेतागण, सत्याग्रह के कारक

मेन्स के लिये:

महत्त्व, वैकोम सत्याग्रह में महिलाओं की भूमिका

चर्चा में क्यों?

वर्ष 2024 में वैकोम सत्याग्रह के सौ वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में केरल और तमिलनाडु के मुख्यमंत्रियों ने संयुक्त रूप से इसके शताब्दी समारोह का उद्घाटन किया।

वैकोम सत्याग्रह:

■ पृष्ठभूमि:

- त्रावणकोर में कुछ सबसे कठोर, परिष्कृत और नरिदयी सामाजिक मानक एवं रीति-रिवाज थे जो एकसामंती, सैन्यवादी और क्रूर सरकार की रियासत थी।
 - **एझावा और पुलाय** जैसी नचिली जातियों को अपवर्तिर माना जाता था तथा उन्हें उच्च जातियों से दूर रखने के लिये विभिन्न नियम बनाए गए थे।
 - इनमें केवल मंदिर में प्रवेश पर ही नहीं बल्कि मंदिरों के आसपास की सड़कों पर चलने पर भी प्रतिबंध था।

■ नेतागणों का योगदान:

- वर्ष 1923 में माधवन ने अखिल भारतीय कॉन्ग्रेस समिति की काकीनाडा बैठक में इस मुद्दे को एक प्रस्ताव के रूप में प्रस्तुत किया। इसके बाद जनवरी 1924 में केरल प्रदेश कॉन्ग्रेस समिति द्वारा गठित **कॉन्ग्रेस असपृश्यता समिति** ने इसे आगे बढ़ाया।
- माधवन, के.पी. केशव मेनन जो केरल प्रदेश कॉन्ग्रेस समिति के तत्कालीन सचिव थे और कॉन्ग्रेस नेता एवं शिक्षावर्क के **केलप्पन (जन्हें केरल के गांधी के नाम से भी जाना जाता है)** को वैकोम सत्याग्रह आंदोलन का अग्रदूत माना जाता है।

■ सत्याग्रह के अग्रणी कारक:

- ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा समर्थित **ईसाई मशिनरियों** ने अपनी पहुँच का विस्तार किया था और एक दमनकारी व्यवस्था के चंगुल से बचने के लिये **कई नमिन जातियों ने ईसाई धर्म अपना लिया था।**
- महाराजा अयलियम थरुनाल ने **कई प्रगतशील सुधार किये।**
 - इनमें सबसे महत्त्वपूर्ण सभी के लिये मुफ्त प्राथमिक शिक्षा के साथ एक **आधुनिक शिक्षा प्रणाली** की शुरुआत थी, यहाँ तक कि यह शिक्षा **नमिन जातियों के लिये भी उपलब्ध थी।**

■ सत्याग्रह की शुरुआत:

- **30 मार्च, 1924** को सत्याग्रहियों ने वर्जित सार्वजनिक सड़कों पर जुलूस निकाला। जुलूस को उस जगह से 50 गज की दूरी पर रोक दिया गया था जहाँ सड़कों पर (**वैकोम महादेव मंदिर** के आसपास) चलने के खिलाफ उत्पीड़ित समुदायों को चेतावनी देने वाला बोर्ड लगाया गया था।
- **गोवदि पणक्किर (नायर), बाहुलेयान (एझावा)** और **कुंजप्पु (पुलैया)** ने खादी वस्त्र एवं खादी की टोपी पहनकर नषिधात्मक आदेशों का उल्लंघन किया।
- **पुलसि के रोकने पर** तीनों लोग वरिध में सड़क पर बैठ गए जन्हें बाद में गरिफ्तार कर लिया गया।
- इसके बाद प्रतिदिन तीन अलग-अलग समुदायों के तीन स्वयंसेवकों को नषिदिध सड़कों पर चलने के लिये भेजा गया।
 - इस प्रकार एक सप्ताह के भीतर **आंदोलन के सभी नेताओं को गरिफ्तार कर लिया गया।**

■ महिलाओं की भूमिका:

- पेरयार की पत्नी **नागम्मई** और बहन **कन्नमल** ने लड़ाई में अभूतपूर्व भूमिका निभाई।

■ गांधीजी का आगमन:

- **गांधीजी** ने **मार्च 1925 में वैकोम जाकर** विभिन्न जाति समूहों के नेताओं के साथ कई चर्चाएँ कीं तथा महारानी रीजेंट से उसके वर्कला

शविरि में मुलाकात की।

- गांधीजी और डब्ल्यू.एच. पटि (त्रावणकोर के पुलसि आयुक्त) के बीच परामर्श के बाद **30 नवंबर, 1925** को **वैकोम सत्याग्रह** को **आधिकारिक तौर पर वापस ले लिया गया**।
- सभी कैदियों की रहिाई तथा सड़कों तक पहुँच प्रदान करने के लिये एक समझौता हुआ।

■ **मंदिर प्रवेश उदघोषणा:**

- **वर्ष 1936** में त्रावणकोर के महाराजा द्वारा **ऐतहासिक मंदिर प्रवेश उदघोषणा पर हस्ताक्षर** किये गए, जिसने मंदिरों में प्रवेश पर **सदियों पुराने प्रतिबंध को हटा दिया**।

■ **महत्त्व:**

- देश भर में बढ़ती राष्ट्रवादी भावनाओं और आंदोलनों के बीच इसने सामाजिक सुधार के कार्यों को आगे बढ़ाया।
- **यह त्रावणकोर में गांधीवादी अहसिक वरिध का तरीका अपनाने वाला पहला आंदोलन था।**
- सामाजिक दबाव, पुलसि कार्रवाई और यहाँ तक कविरष 1924 में प्राकृतिक आपदा के दौरान भी 600 से अधिक दिनों तक बना रुके यह आंदोलन जारी रहा।
- वैकोम सत्याग्रह के दौरान जातगत बंधन टूट गए, जो अभूतपूर्व कार्य था।

नष्कर्ष:

- वर्ष 1917 तक भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस ने सामाजिक सुधार करने से इनकार कर दिया लेकिन गांधी के उदय और नमिन जातिसमुदायों एवं अछूतों की बढ़ती सक्रयिता के चलते सामाजिक सुधार जलद ही कॉन्ग्रेस और गांधी की राजनीतिका केंद्रबिंदु बन गया।

स्रोत: द हिंदु

PDF Refernece URL: <https://www.drishtiiias.com/hindi/printpdf/vaikom-satyagraha>

